एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9013T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत शिलालेख एवं छंद**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में प्राकृत शिलालेख एवं छंद पद्धति का अध्ययन करेगे। भारतीय इतिहास परम्परा का प्राकृत शिलालेख के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करेंगे**,** साथ ही प्राकृत-अपभ्रंश छन्दों के नियमों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	4. विद्यार्थियों में प्राकृत शिलालेख एवं छंद पद्धति की समझ विकसित होगी। 5. शिलालेखों के माध्यम से भारतीय पुरातत्त्व एवं इतिहास की जानकारी होगी। 6. प्राकृत-अपभ्रंश छन्दों के नियमों का भी ज्ञान होगा। 7. शिलालेखों को पढ़ सकेंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	प्राकृत शिलालेख : अशोक के 1 से 8 शिलालेख (गिरनार पाठ)	12
इकाई - II	खारवेल के शिलालेख का सटिप्पण अनुवाद	12
इकाई - III	प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रश्न	12
इकाई - IV	प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्द-निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण- गाहा, पथ्या, विपुला, उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी, स्कन्धक, अपभ्रंश के छन्द- द्विपदि कड़वक, घत्ता, पज्झडिका, हेला, चौपाइया।	12
इकाई - V	प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य : छन्द, अलंकार एवं कोश के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय संस्कृत साहित्य के अलंकार ग्रन्थों में प्राकृत गाथाएँ : प्राकृत पुष्करिणी (डा. जगदीशचन्द्र जैन)	12
सहायक पुस्तकें	1. अशोक - डॉ. भण्डारक 2. अशोक - राधा कुमुद मुखर्जी 3. खारवेल शिलालेख - डॉ. शशिकान्त जैन 4. जैन पाण्डुलिपियां एवं शिलालेख : एक परिशीलन, प्रो. राजाराम जैन, श्री गणेश वर्णी संस्थान, वाराणसी, 2002ई. 5. छन्दानुशासन - हेमचन्द 6. प्राकृत पैंगलम (सम्बन्धित अंश) 7. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास - डॉ. गुलाब चन्द चौधरी 8. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9110T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II-A
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत भाषा विज्ञान
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-IV (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में प्राकृत भाषा विज्ञान का अध्ययन करेगे। प्राकृत व्याकरण के परिप्रेक्ष्य में क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र का अध्ययन करेंगे । प्राकृत भाषा विज्ञान के विभिन्न नियम एवं ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम का अध्ययन करेंगे । पालि-प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास एवं वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध का अध्ययन करेंगे ।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	**1.** विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण एवं प्राकृत भाषा विज्ञान की समझ विकसित होगी। 2. प्राकृत भाषा विज्ञान के विभिन्न नियम एवं तथ्यों का भी ज्ञान होगा। 3. ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	प्राकृत व्याकरण, प्राकृत व्याकरण के क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र में से आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों की व्याख्या पूछना (139 से 182 तक)	12
इकाई – II	प्राकृत व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय	12
इकाई – III	भाषा विज्ञान एवं पालि-प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)	12
इकाई – IV	ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत (लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम) समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि आदि के सोदाहरण, नियम) इसके लिए प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री (अध्याय प्रथम पृ.1 से 23 एवं अध्याय पंचम पृ.113 से 153 का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित)	12
इकाई – V	प्राकृत में निबन्ध लेखन	12
सहायक पुस्तकें	1 हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर 2. हेम प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन, 1983 3. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड-1) - डॉ. प्रेम सुमन जैन 4. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री 5. प्राकृत रचनोदय - डॉ. उदय चन्द्र जैन 6 .प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उनके प्राक् संस्कृत तत्त्व - डॉ. के. आर. चन्द्रा, अहमदाबाद। 7. भाषा विज्ञान की रूपरेखा - डॉ. भोलानाथ तिवारी 8. भाषा विज्ञान की रूपरेखा - डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री 9. अपभ्रंश रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर 9. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर 10. प्राकृत हिन्दी कोश - डॉ. उदय चन्द्र जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9111T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II-B
पाठ्यक्रम का नाम	समकालीन आधुनिक प्राकृत साहित्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-IV (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थी प्राकृत साहित्य के आधुनिक रचनाकारों का अध्ययन करेंगे तथा वर्तमान में निरन्तर प्रवाहित प्राकृत रचनाधार्मिता का भी अध्ययन का अवसर मिलेगा। साथ ही आधुनिक प्राकृत कवि एवं मनीषियों के लोकपरक अवदानों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में आधुनिक प्राकृत कवि एवं मनीषियों के लोकपरक अवदानों की समझ विकसित होगी। 2. वर्तमान में प्रवाहित प्राकृत रचनाधार्मिता की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	वीरब्भुदयं (द्वितीय सर्ग) - डॉ. उदयचंद जैन	12
इकाई – II	भावणा सारो - आचार्य सुनीलसागर	12
इकाई – III	धम्मकहा (अंजणचोरकहा एवं अणंतमईकहा) और तित्थयर भावणा- मुनि प्रणम्य सागर (1-50 गाथा)	12
इकाई – IV	रयणवालकहा (पढम ऊसासो) - चंदनमुनि	12
इकाई – V	आधुनिक प्राकृत मनीषी (घासीलालजी महाराज, आचार्य वसुनंदि, मुनि आदित्यसागर आदि) मनीषी एवं उनके साहित्य का अध्ययन	12
सहायक पुस्तकें	1. वीरब्भुदयं, डॉ. उदयचंद जैन, न्यू बुक कारपोरेशन, नईदिल्ली, 2024ई. 2. नीतिसंगहो (सुनील समग्र), आचार्य सुनीलसागर, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2016ई. 3. तित्थयर भावणा, मुनि प्रणम्यसागर, जैनविद्या, प्राकृत एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, 2014ई. 4. तित्थयर भावणा अनुशीलन, सम्पा. डॉ. सुमत कुमार जैन, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, 2023ई. 5. रयणवालकहा, चंदनमुनि, पटेल सोसायटी, शाहीबाग, अहमदाबाद, 1971ई 6. प्राकृत समय, सम्पा. डा. ज्योति बाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2022ई. 7. अप्पणिब्भर-भारदं, आचार्य वसुनंदी, निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, नोएडा, 2020ई. 8. धम्मकहा, मुनि प्रणम्यसागर, आचार्य अकलंक देव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2016	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9112T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-V (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को इस पत्र में ज्ञान, नय, नवपदार्थ एवं पुद्गलास्तिकाय का अध्ययन शौरसेनी ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान एवं व्याख्या साहित्य, साथ ही शौरसेनी आगमों पर रचित प्रमुख टीकाओं का अध्ययन भी कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा में रचित आगमों में वर्णित सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी। 2. आगम प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे 3. आगमों के व्याख्या साहित्य के भेद एवं शौरसेनी आगमों की प्रमुख टीकाओं की जानकारी भी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	शौरसेनी आगम साहित्य का परिचय	12
इकाई - II	कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) - डॉ. ए. एन. उपाध्ये	12
इकाई - III	पंचास्तिकाय (आ.कुन्दकुन्द) द्वितीय अधिकार (गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)	12
इकाई - IV	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - V	आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्त्व (निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका) एवं शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकायें	12
सहायक पुस्तकें	1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा - डॉ. ए. एन. उपाध्ये 2. पंचास्तिकाय -पं. हीरा लाल शास्त्री 3. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 5. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमि चन्द शास्त्री 7. जैन संस्कृति कोश, भाग 1-3 - प्रो. भाग चन्द जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9113T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III-B
पाठ्यक्रम का नाम	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन विधि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE-V (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को पाण्डुलिपि का सामान्य अर्थ एवं स्वरूप, उसके स्रोत, लेखनकला एवं संरक्षण-संवर्धन की प्रवृतियों का अध्ययन कराया जायेगा। इसके अतिरिक्त पाण्डुलिपि संरचना, पाण्डुलिपि शास्त्र संग्रहणकेन्द्र, प्राकृत पाण्डुलिपि सम्पादन के नियम एवं प्राचीनता का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी पाण्डुलिपि की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 2. प्राकृत की प्राचीन पाण्डुलिपियों का ज्ञान विकसित होगा। 3. ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 4. संरक्षित प्राचीन विरासत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय, इतिहास, परम्परा एवं प्रकार तथा लेखन सामग्री	12
इकाई – II	पाण्डुलिपियों के संग्रहण केन्द्रों का परिचय, सर्वेक्षण एवं कृति चयन की प्रविधि तथा विभिन्न ग्रन्थ सूचियों (केटेलॉग्स) का परिचय	12
इकाई – III	पाण्डुलिपि-सम्पादन के नियम : सैद्धान्तिक विश्लेषण	12
इकाई – IV	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित किसी एक पाठ्य कृति का सम्पादन (लगभग40-50 गाथाओं अथवा 4 पृष्ठों का सम्पादन कार्य)	12
इकाई – V	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित कृति का अनुवाद (हिन्दी अथवा अंग्रेजी अनुवाद), कृति परिचय एवं अध्ययन	12
सहायक पुस्तकें	1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला - डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश 2. पाण्डुलिपि विज्ञान - डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 3. पाठालोचन की भूमिका - डॉ. कत्रे 4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान - डॉ. महावीर प्रसाद जैन 5. भारतीय पुरालिपि विद्या - डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी 6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 7 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह 9. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 10. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9114T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थियों को जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार, ज्ञान के प्रकार , गुणस्थान, रत्नत्रय, मोक्ष स्वरूप एवं तीर्थंकर परम्परा व प्रमुख तीर्थंकरों का जीवन-दर्शन का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों को जैन गृहस्थाचार एवं मुनि के आचार की समझ विकसित होगी। 2. जैन परम्परा के प्रमुख सिद्धान्तों की जानकारी हो सकेगी । 3. प्रमुख तीर्थंकरों के जीवनचरित्र का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	समणसुत्तं चयनिका (डॉ.के.सी.सोगानी) गाथा 1-60	12
इकाई – II	जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार	12
इकाई – III	जैन ज्ञान मीमांसा, ज्ञान का स्वरूप, भेद एवं महत्त्व ज्ञान के प्रकार (मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवलज्ञान)	12
इकाई – IV	जैन धर्म का स्वरूप - गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष स्वरूप	12
इकाई – V	तीर्थंकर परम्परा, ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर का जीवन-दर्शन	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन - मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्रमुनि 2. समणसुत्तं, प्रकाशक सर्वसेवा संघ, वाराणसी, 1975 3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप - आ. देवेन्द्र मुनि 4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी - डॉ. नथमल 5. परमात्म प्रकाश एवं योगसार - डॉ. ए. एन .उपाध्ये 6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर 7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य - साध्वी संघमित्रा 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन 9. श्रावक धर्म दर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 10. जैन दर्शन एवं कबीर-एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. मन्जूश्री 11. समणसुत्तं चयनिका, प्रो. कमलचंद सोगानी, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर. 12. समणसुत्तं समख्यातिसंस्कृतटीकोपेतम्, प्रो.श्रीयांश कुमार सिंघई, प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूं, 2022	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9115T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV-B
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत आगम साहित्य -शौरसेनी आगम
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को इस पत्र में शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान एवं शौरसेनी आगम षट्खण्डागम, समयसार एवं मूलचार ग्रन्थों भाषात्मक एवं मीमांसात्मक अध्ययन कराया जायेगा तथा का शौरसेनी भाषा के नियमों का अध्ययन भी कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा में रचित आगमों में वर्णित सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी। 2. शौरसैनी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे 3. शौरसेनी प्राकृत में रचित ग्रन्थों का भाषात्मक अध्ययन एवं इस प्राकृत के भाषा-नियमों का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	षट्खण्डागम- धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड, के प्रथम 1से 46 सूत्र)	12
इकाई – II	समयसार - आचार्य कुन्दकुन्द (द्वितीय अधिकार)	12
इकाई – III	मूलाचार - आचार्य वट्टकेर स्वामी (षडावश्यक अधिकार)	12
इकाई – IV	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	12
इकाई – V	जैनागमों का भाषात्मक एवं मीमांसात्मक विवेचन तथा शौरसेनी प्राकृत व्याकरण की सामान्य विशेषताएँ	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन - मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्रमुनि 2. षट्खण्डागम- धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड)सोलापुर 3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप - आ. देवेन्द्र मुनि 4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी - डॉ. नथमल 5. समयसार - आचार्य कुन्दकुन्द 6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर 7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य - साध्वी संघमित्रा 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन 9. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 10. मूलाचार - आचार्य वट्टकेर स्वामी, सम्पादक -डॉ. फूलचन्द जैन ''प्रेमी'', वाराणसी	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9116T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V-A
पाठ्यक्रम का नाम	जैन कला एवं स्थापत्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में भारतीय कला परम्परा में जैनकला के वैशिष्ट्य का अध्ययन जैन ग्रन्थों के सन्दर्भों के माध्यम से करेंगे। साथ ही जैनशिल्प, स्थापत्यकला, मूर्ति कला एवं चित्रकला की महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैन कला की समझ विकसित होगी। 2. जैन धर्म की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी। 3. भारत में स्थित जैनकला के विद्यमान केन्द्रों का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	जैन कला का उद्भव एवं विकास	12
इकाई – II	जैन धर्म और कला का सम्बन्ध	12
इकाई – III	जैन शिल्प, स्थापत्य कला -एलोरा, खजुराहो एवं माउण्ट आबु के मन्दिर	12
इकाई – IV	मथुरा की जैन मूर्तिकला एवं श्रवणबेलगोला की जैन मूर्तियां	12
इकाई – V	जैन चित्रकला - अजन्ता, एलोरा की गुफायें	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री 2. जैन चित्र कल्पद्रुम - साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद 3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर - वासुदेव उपाध्याय 4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास - रमानाथ मिश्र 5 . कला-विण्णाण, आचार्य वसुनंदी, निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, नोएडा, 2021ई. 6. स्टडीज इन जैन आर्ट - यू. जी. शाह, 1955, बनारस 7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया - मोतीचन्द, 1914 8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. प्रेम सुमन जैन 9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9117T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V-B
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में विद्यार्थी प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय, प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ एवं प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श के अन्तर्गत सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, शोध की भावी दृष्टि, शोध संस्थाएँ एवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र में प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय, प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत काव्य साहित्य की शोधपरकदृष्टि का ज्ञान होगा। 3. प्राकृत शोध संस्थाएँ एवं आधुनिक शोध कर्ताओं की परिचयात्मक जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय एवं प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ और महत्ता	12
इकाई – II	महाकाव्यों की परम्परा एवं प्राकृत महाकाव्यों का स्वरूप: ऐतिहासिक, पौराणिक एवं शास्त्रीय महाकाव्य	12
इकाई – III	प्राकृत चरित एवं कथा साहित्य का वैविध्य एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई – IV	प्राकृत खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य : परम्परा एवं विकास	12
इकाई – V	प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श: 1. सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, 2. शोध की भावी दृष्टि, 3.शोध संस्थाएँ अवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री 2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3 3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरा लाल शास्त्री 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमि चन्द शास्त्री 6. प्राकृत भारती- प्रो. प्रेम सुमन जैन 7. जैन संस्कृति कोश - प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1-3 8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. प्रेम सुमन जैन 9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9118T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI-A
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत के प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थी इस पत्र में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा एवं सृजनशीलता से रचना करने वाले प्रमुख मनीषियों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	विद्यार्थी को प्राच्यविद्याओं के क्षेत्र में अपनी सृजनशीलता के माध्यम से अवदान करने वाले प्राकृत रचना एवं रचनाकारों के बारे में समझ विकसित होगी एवं इनका ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	600 ई.पू. से प्रथम शताब्दी तक : भगवान् महावीर एवं उनकी आचार्य परम्परा का इतिहास, श्रुतकेवली परम्परा, श्रुतकेवली भद्रबाहु, स्थूलभद्राचार्य, धरसेनाचार्य, पुष्पदंत एवं भूतबली, गुणधराचार्य आदि।	12
इकाई – II	द्वितीय से पांचवीं शताब्दी तक : जैन आगमिक वाचनाएँ, आर्य स्कंदिल, वट्टकेर स्वामी, शिवार्य, यतिवृषभाचार्य, देवार्धिगणी क्षमाश्रवण आदि।	12
इकाई – III	छठी से दसवीं शताब्दी तक : आचार्य सिद्धसेन, प्रवरसेन, वाक्पतिराज, स्वामी कार्तिकेय, निर्युक्तिकार भद्रबाहु, भाष्यकार जिनभद्रगणि, संघदासगणि, हरिभद्रसूरि, वीरसेन स्वामी, जिनसेन, स्वयंभू आदि।	12
इकाई – IV	ग्यारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी तक : हेमचंद्राचार्य, नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवसेनाचार्य, महाकवि पुष्पदंत, वीरकवि, देवेन्द्रगणि, नेमिचंद्रसूरि, आम्रदेवसूरि आदि।	12
इकाई – V	सोलहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक : मुनि पद्मसिंह, यशोविजय, श्रुतसागराचार्य, कवि रइधू, पण्डित तेजपाल आदि।	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डा. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 2. प्राकृत के प्रमुख दिगम्बर जैन ग्रन्थ: एक परिचय, सम्पा. डा. कमलचंद सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2017 4. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1- 6, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस 5. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डा. जगदीश चन्द्र जैन 6 .जैन संस्कृति कोश - प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1-3 7 प्राकृत रत्नाकर, प्रो. प्रेम सुमन जैन, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला, 2012ई. 8. भगवान् महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग 1-4, डा. नेमिचंद्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफफरनगर, 2012ई. 9. जैनशासन के प्रभावक आचार्य, साध्वी संघमित्रा 10. प्रमुख जैन आचार्यों का परिचय, प्रो. वीरसागर जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2019ई.	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर Note - इस पत्र में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध अथवा अप्रकाशित कृति का हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद लगभग 50-60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा अथवा इंटर्नशिप, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी। **Note- यह प्रश्न पत्र केवल नियमित विद्यार्थियों के लिए मान्य होगा।**	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9119S
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI-B
पाठ्यक्रम का नाम	लघु शोध-प्रबन्ध : किसी प्राकृत एवं जैनविद्या विषय पर लघु शोधप्रबन्ध अथवा अप्रकाशित कृति का हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद अथवा इंटर्नशिप
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	रचनात्मक एवं प्रायोगिक / नैदानिक मूल्यांकन
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्रस्तुत पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध एवं लेखनकला में अपने रुचि और प्रतिभा का विकास करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	विद्यार्थी इस पत्र के माध्यम से शोध एवं लेखनकला अथवा इंटर्नशिप में अपनी प्रतिभा को बढ़ाने में सहायता प्राप्त करेंगे और भविष्य में उन्हें शोधकार्य करने में कठिनाई नहीं होगी।

लघु शोध को असाइन करने, मॉनिटर करने और मूल्यांकन करने के लिए दिशानिर्देश :-

1. जो छात्र शोध का विकल्प चुनते हैं उन्हें एक शोध निर्देशक नियुक्त किया जाएगा जो विभाग में नियमित शिक्षकों में से एक होगा। सत्र की शुरुआत के पहले सप्ताह में विभागीय समिति की बैठक में विषयों को मंजूरी दी जायेगी।

2. चतुर्थ सेमेस्टर परीक्षा शुरू होने से पहले शोध प्रबंध को मेंटर द्वारा विधिवत अग्रेषित कर विभागाध्यक्ष को जमा करना होगा।

3. इस 4 क्रेडिट कोर्स के लिए 120 घंटे की शैक्षणिक गतिविधि होगी। मेंटर के साथ 20 घंटे संपर्क और 100 घंटे पहले से तैयारी होगी। संपर्क घंटे संकाय सदस्यों के कार्यभार का हिस्सा नहीं होंगे। ये अध्ययन घंटे पीएचडी मार्गदर्शन में समर्पित कार्य के समान होंगे।

4. शोध प्रबंध छठे पेपर (PKT9119S) के बदले में होगा और 80 EoSE + 20 आंतरिक मूल्यांकन =100 अंकों का होगा।

5. सेमेस्टर परीक्षा के अंत के लिए, शोध प्रबंध की जांच तीन परीक्षकों के एक बोर्ड द्वारा की जाएगी जिसमें एक बाहरी परीक्षक, निर्देशक, विभगाध्यक्ष या उसके नामित व्यक्ति शामिल होंगे। 80 अंकों का वितरण इस प्रकार होगा- i)लिखित निबंध- 30 अंक, ii)स्पष्टता और प्रोजेक्ट आउटपुट- 20 अंक, iii)पावर पॉइंट्स प्रेजेंटेशन- 15 अंक, iv)मौखिक परीक्षा- 15 अंक

6. आंतरिक मूल्यांकन अंक पर्यवेक्षक द्वारा प्रस्तुत किये जायेंगे। आंतरिक मूल्यांकन मेंटर को सौंपी गई लघु मध्यावधि प्रगति रिपोर्ट के आधार पर किया जाना चाहिए।

7. लघु शोध के मुखपृष्ठ पर 'एमए जैनविद्या एवं प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर के छठे पेपर के स्थानपर' लिखा होना चाहिए।

8. ग्रंथ सूची को छोड़कर, निबंध न्यूनतम 50-70 पृष्ठों का होना चाहिए।

9. साहित्यिक चोरी की रिपोर्ट संलग्न की जानी चाहिए। अनुसंधान पद्धति की आवश्यकताएं पीएचडी थीसिस के समान ही होंगी।